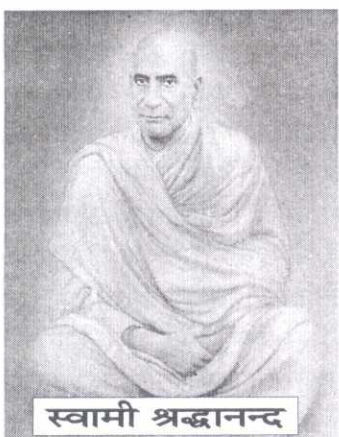




स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।



पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 40 अंक 2

“शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है”

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 500 रुपये

फरवरी 2017 विक्रम सम्वत् 2073 माघ - फाल्गुन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ँ श्री चतर सिंह नागर ँ श्री विजय गुप्त ँ श्री सुरेन्द्र गुप्त ँ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

“राष्ट्र निर्माता महर्षि दयानन्द”

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

प्राचीन काल में रामराज्य की छत्र छाया में प्रजा सुख शान्ति और आनन्द कर रही थी। महाभारत काल कुरीतियों के कारण मिथ्या कल्पनाओं से आच्छादित था। उसके पश्चात देवदयानन्द के आने से पूर्व समाज में लोग धार्मिक दृष्टि से दुर्गन्ध पैदा कर रहे थे। परमेश्वर की कृपा से जन कल्याण हेतु एक किरण प्रस्फुटित हुई टंकरा भूमि को पवित्र करती जहां मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ उसी के आधार पर उसका नाम मूलशंकर रखा गया और वह ज्योति अमर हो गयी वह एक नई दिशा दिखा गयी।

इक मौज मचल जायें तो तूफान बन जायें।
इक फूल मचल जाये गुलिस्तान बन जायें।
इक बूंद के कतरे में है तासीर इतनी।
इक कौम की तकदीर का उन्वान बन जाये।

महर्षि दयानन्द को मैं तूफान बनने वाली लहर मान लूँ मैं उस बाग के रूप में फेल जाने वाला फूल कहूँ अथवा रक्त की ऐसी बिन्दु जो एक राष्ट्र के भाग्य का मूलाधार बतलाऊँ तो इसमें अशंका भी अत्युक्ति नहीं होगी। तुम मुझे रक्त दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा के उद्घोषक भारत माँ के लाडले सपूत नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा है।

दयानन्द सरस्वती निःसन्देह उन अत्यधिक शक्तिशाली व्यक्तियों में से हैं। जिन्होंने वर्तमान भारत का निर्माण किया है। जो उसके नैतिक पुनरुद्धार और धार्मिक पुनरुद्धार के लिये उत्तर दायी हैं। इतना ही नहीं सन् 1929 में अमरावती में भाषण देते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था मैं स्वामी दयानन्द को संसार के राजनैतिक नेताओं में सबसे ऊँचा

स्थान देता हूँ। फ्रांसीसी दार्शनिक रोम्यां रोलां ने आधुनिक भारत के राष्ट्रीय पुनर्जागरण एवं पुनरुत्थान का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही दिया। उन्होंने लिखा है। स्वामी दयानन्द राष्ट्रीय संगठन और पुनः निर्माण का सर्वाधिक सशक्त मसीहा था। उन्हें मैं भारत की सर्वश्रेष्ठ विभूति मानता हूँ। स्वामी दयानन्द सरस्वती के राष्ट्र निर्माण के कौशल पर विचार करने से हमारा मस्तक उस महा पुरुष के आगे झुक जाता है। वर्तमान युग के क्रान्त दर्शी उस महापुरुष ने यज्ञों में पशुबलि का निषेध करते हुए अश्वमेध का अर्थ यास्क की निर्वचन शैली से स्पष्ट किया। अश्वमेध अर्थात् राष्ट्र की सेवा ही अश्वमेध है। स्वामी दयानन्द ने आधुनिक युग में सर्वप्रथम राष्ट्र की परिकल्पना को शब्दों में बाँधा।

सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में आधुनिक भारत वर्ष की सीमाओं का निर्देश किया उत्तर में हिमालय दक्षिण में विन्ध्याचल और पश्चिम में सरस्वती व अटक नदी पूर्व में दृषद्वती (ब्रह्मपुत्र) जो कटक में मिली है। महर्षि ने हिमालय से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक के भूभाग को एक सम्बोधित किया। स्वामी जी से एक दिन मोहन लाल, विष्णुलाल पाण्ड्या ने पूछा भगवान भारत का पूर्ण हित कब होगा। तब स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि एक धर्म एक भाषा और जातीय उन्नति का होना। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा भाव और भावना में एकता आ जाये वहां सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लग जाते

हैं अतः एक धर्म के लिये स्वामी दयानन्द ने अपने सारे जीवन काल में समस्त मतमतान्तरों एवं सम्प्रदायों के मिथ्याडम्बरों की दीवारों को तोड़ने का प्रयत्न किया। सन् 1876 में विक्टोरिया के सिंहासनारोहण के समय दिल्ली दरबार लगा। स्वामी दयानन्द ने अनेकों प्रमुख मतानुयायियों को सत्यासत्य के निर्णय के लिये बुलाया। एक भाषा के प्रचारार्थ गुजराती होते हुए भी आर्य भाषा हिन्दी में ग्रन्थों की रचना की, वे हिन्दी गद्य के निर्माताओं में अग्रणी थे। इस तथ्य को हिन्दी के विद्वान लेखक विष्णु प्रभाकर ने स्वीकार किया, भाव और भावना की एकता के लिए उन्होंने आर्य समाज के चुनाव तंत्र द्वारा प्रजातंत्र व मंत्रिपरिषद का महत्व बतलाया। स्वामी दयानन्द ने सन् 1866 में अजमेर में कर्नल ब्रक्स के विदाई समारोह में कहा था कि आप लन्दन पहुँच कर महारानी विक्टोरिया को कह दें यदि भारतीयों के धार्मिक जीवन में शासन इसी प्रकार रहा और गाय जो भारत की अर्थ व्यवस्था की रीढ़ और सांस्कृतिक जीवन की प्रतीक है उसका वध यदि जारी रहा तो 1857 की क्रान्ति भी दोहराई जा सकती है। इस अन्तिम वाक्य से

उनका समुन्नत राजनैतिक स्वरूप स्पष्ट होता है। स्वामी दयानन्द ने दादा भाई नौरोजी से 1906 में तथा 1916 में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक से बहुत पहले स्वराज्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया।

महर्षि के राष्ट्र निर्माण को भारतीय ही नहीं विदेशों ने भी सराहा एनीबेसेन्ट ने लिखा है:- भारतीयों के लिए भारत में स्वराज्य का नारा दयानन्द ने ही दिया था स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतंत्र स्वाधीन निर्भय राज्य नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों द्वारा पदाक्रान्त हो रहा है। कोई कितना करें परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है। वह सर्वोत्तम होता है प्रजा पर पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है यह थी पूर्ण स्वराज्य की व्याख्या और मांग जो बहुत बाद में 1929 में कांग्रेस द्वारा प्रकट की गई। 24 जुलाई 1882 को स्वामी दयानन्द ने अपने प्रिय शिष्य रामानन्द को पत्र में लिखा परमात्मा आपकी बुद्धि को परोपकार में निरन्तर नियुक्त करें जिससे पुनः आर्यावर्त देश अपनी पूर्व दशा को प्राप्त हो स्वराज्य प्राप्ति के लिये उन्होंने कश्मीर शासक हरि सिंह से सम्पर्क का प्रयत्न किया किन्तु वे मूर्ति पूजा से चिपके थे। उत्तर भारत एवं मध्य भारत के राजा सुरा सुन्दरी में लीन थे। तब महर्षि ने अपने शिष्य

**महर्षि दयानन्द
बोधोत्सव जन्मदिन एवं वसन्तपंचमी
की समस्त देशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं।**

श्यामजी कृष्ण वर्मा को सशस्त्र संघर्ष की प्रेरणा दी और इस कार्य के लिये इंग्लैंड भेजा। 13 जुलाई 1880 को महर्षि ने पत्र द्वारा इंग्लैंड की संसद में भारतीयों की कठिनाइयों को प्रभावशाली ढंग से पहुंचाने के लिये श्यामजी कृष्ण वर्मा को पत्र लिखा।

स्वाधीनता के संघर्ष में श्यामजी कृष्ण वर्मा का विदेशों से किया सहयोग अविस्मरणीय है। लगभग 80 प्रतिशत आर्य समाज के सहयोग से ही स्वाधीनता आयी इससे महर्षि का राष्ट्र निर्माण स्पष्ट है।

श्रीमती एनीबेसेंट ने कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में कहा था जब स्वराज्य मन्दिर बनेगा तो उसमें बड़े-बड़े नेताओं की मूर्तियां होगी और सबसे ऊँची मूर्ति दयानन्द की होगी। प्रथम लोक सभाध्यक्ष आर्यंगर ने कहा था। यदि महात्मा गांधी राष्ट्र पिता हैं। तो स्वामी दयानन्द राष्ट्र पितामह हैं।

भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने कहा मैं ऋषि दयानन्द को हर प्रकार की मानसिक सामाजिक और राजनैतिक दास्ता से मुक्त कराने वाला मानती हूँ।

ब्रती ब्रह्मचारी समुद्धार कारी,
सदा शंकरी वेद विद्या प्रचारी ।
नमस्ते दयानन्द आनन्द कारी ॥
नमस्ते दयानन्द आनन्द कारी ॥

ऋषि के प्रति

दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा।
विश्व गगन की मोह-रात्रि में सदा प्रकाश करेगा ॥
मनोयोग से इसे जलाया,
मन का कल्मष दूर भगाया,
हटा सभी भय दूर, सभी में पौरुष ज्योति भरेगा।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ॥
वर्ण भेद और जाति श्रेष्ठता,
निज स्वार्थों में पड़ी मनुजता,
फिर खाई को पाट सभी में समता भाव भरेगा।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ॥
देशद्रोहिता, परनिंदा को,
आत्म प्रशंसा के फन्दा को,
हटा, काटकर प्रेम भाव से राष्ट्र भक्ति भरेगा।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ॥
नित सुख में जो पड़े हुए हैं,
जिसे मान सच अड़े हुए हैं,
भोगवाद के उपासकों में विरक्ति भाव भरेगा।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ॥
अपने ही तिल-तिल जलकर,
त्याग तपस्या का बल देकर,
वेद ज्ञान से तममय पथ ज्योतिर्मयी करेगा।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ॥

गृहस्थ की चार कामनाएँ

- महात्मा चैतन्यमुनि

वैदिक धर्म की विलक्षणता एवं श्रेष्ठता यह है कि इसमें मानव जीवन के समग्र एवं पूर्ण विकास की संभावनाएँ हैं। हमारे मनीषियों ने व्यक्ति की औसत आयु सौ वर्ष मानकर उसे चार बराबर भागों में बांटा है। इन्हें की क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-आश्रम कहा जाता है। अपनी आन्तरिक शक्तियों का पूर्ण विकास करने और गुरुजनों से पूर्ण विकास करने और गुरुजनों से पूर्णतया दीक्षित हो जाने के बाद ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में अन्य आश्रमों से श्रेष्ठ इसलिए कहा जाता है क्योंकि अन्य सभी आश्रमवासी भी किसी न किसी रूप में गृहस्थाश्रमी पर ही निर्भर रहते हैं। वेद में सदगृहस्थ को क्या-क्या कामनाएँ करनी चाहिए इसका ही उल्लेख नहीं है बल्कि ऐसे दिशानिर्देश भी हैं जिनसे हमारा गृहस्थाश्रम सुखी व सम्पन्न बन सकता है। यजुर्वेद में अनेक ऐसे मन्त्र हैं जिनमें गृहस्थ को सुखी बनाने के सूत्र दिए गए हैं। एक मन्त्र इस प्रकार है-
क्रव्यादमग्निं प्र हिणेमि दूरं यमराज्य गच्छतु रिप्रवाहः। इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्॥ (यजु. 35-19) गृहस्थ कहता है कि (क्रव्यादम्) अपरिपक्व को खानेवाले (अग्निम्) अग्नि को (दूरम्) दूर (प्रहिणेमि) भेजता हूँ। अर्थात् हमारे घर में कोई भी अपरिपक्ववावस्था में मृत्यु का ग्रास न बनें। (रिप्रवाहः) मलों व दोषों को धारण करने वाला (यमराज्यम्) यम के राज्य को (गच्छतु) जाए। (आचार्यो मृत्युर्ववरुणः) इस अथर्व वाक्य के अनुसार आचार्य ही मृत्यु व यम है। (अयम्) यह उस चंचल बच्चे से (इतरः) भिन्न (देवेभ्यः) आचार्य कुल में विद्वान उपाध्यायों से (जातवेदाः) उत्पन्न हुए-हुए ज्ञान वाला (इह एव) यहां हमारे मध्य में ही अर्थात् आचार्य कुल से शिक्षित हो समावृत होकर घर में आए (प्रजानन्) प्रकृष्ट ज्ञान वाला ब्रह्मचारी (हव्यम्) ग्रहण करने योग्य विज्ञान को (वहतु) औरों तक ले जाने वाला हो।

मन्त्र में सदगृहस्थ के द्वारा बहुत ही सुन्दर चार कामनाएँ की गई हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी भी सदगृहस्थ को ये कामनाएँ करनी चाहिए और इन्हें प्राप्त करने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ भी करना चाहिए। गृहस्थ की प्रथम कामना है (क्रव्यादमग्निं प्र हिणेमि) कि हमारे घर में कोई भी अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु का ग्रास न बनें अर्थात् अल्पायु में किसी की मौत न हो। प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण आयु प्राप्त करके ही संसार से जाए। व्यक्ति की औसत आयु सौ वर्ष मानी गई है। हालांकि इससे भी अधिक आयु तक

व्यक्ति जीवित रह सकता है मगर कम से कम सौ वर्ष की आयु तो हमारी होनी ही चाहिए। जो गृहस्थ इस प्रकार की कामना करता है उसे इसके लिए पुरुषार्थ करने की भी आवश्यकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी शास्त्रों में उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए जिन-जिन नियमों का उल्लेख है उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीना चाहिए। चरक् के अनुसार आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य ये स्वास्थ्य के आधार स्तंभ हैं। इसके साथ-साथ निरन्तर व्यायाम, योगासन तथा प्राणायाम आदि के द्वारा भी अपने स्वास्थ्य को ठीक रखा जा सकता है। जिस घर में निरन्तर इस प्रकार के नियमों का पालन किया जाता है वहां पर अल्पायु में मौत होने की संभावनाएं बहुत कम हो जाती हैं।

दूसरी कामना की गई है कि वह सदगृहस्थ (आचार्यो मृत्युर्ववरुणः) अपनी सन्तान को निर्मल व योग्य बनाने के लिए उसे गुरुकुल में आचार्य के पास भेजे। दोषपूर्ण जीवन ही व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। अतः इन दोषों से कोई सुयोग्य आचार्य ही हमारी सन्तान को छुड़ा सकता है। किसी योग्य आचार्य द्वारा ही दुरित दूर हो सकेंगे और भद्रोदय हो सकेगा। आचार्य को यम नाम से भी सम्बोधित किया गया है क्योंकि वह आचार्य ही अपने शिष्यों का शोधन करता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है - वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि॥ (यजु. 6-14) आचार्य विद्यार्थी से कहता है कि (ते वाचं शुन्धामि) मैं तेरी वाणी को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू इस वाणी को असत्यभाषण से अपवित्र करने वाला न हो। तेरी वाणी सत्य से सदा पवित्र बनी रहे। (ते प्राणं शुन्धामि) मैं तेरी घ्राणेन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ जिससे तू घ्राणेन्द्रिय से कृत्रिम गन्धों के प्रति आसक्त न हो जाए। (ते चक्षुः शुन्धामि) तेरी आंख को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू पवित्र देखनेवाला बने। (ते श्रोत्रं शुन्धामि) तेरे कान को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू इन कानों से अभद्र बान्तों को न सुनता रहे और न ही परनिन्दा आदि में स्वाद लेता रहे... (नाभिं ते शुन्धामि) मैं तेरी नाभि को पवित्र करता हूँ, जिससे तेरा जीवन संयम के बन्धन से बंधकर चले। (ते मेढूं शुन्धामि) तेरी उपस्थेन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू ब्रह्मचर्य का जीवन बिताते हुए मूत्र-सम्बन्धी समस्त रोगों से बचा रहे.. (ते पायुं शुन्धामि) तेरी मल-शोधक

इन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ, जिससे ठीक मलशोधन होते रहकर तू रोगों से बचा रहे। (ते चरित्रान् शुन्धामि) तेरे पावों को शुद्ध करता हूँ, जिससे चरित्र सदा ठीक बने रहें। जो शिष्य अपने आचार्य के सान्निध्य में रहकर इस प्रकार से पवित्र होकर निकलेगा वही वास्तव में मन, वचन व कर्म से पूर्ण समर्थ हो सकेगा और यही उसकी चतुर्दिक उन्नति का आधार है...

इसी क्रम में आगे वह गृहस्थ कामना करता है कि (देवेभ्यः) मेरी सन्तान प्रबुद्ध उपाध्यायों (आचार्यों) से शिक्षित होकर यहां आकर घर (सदगृहस्थ) का निर्माण करने वाली हो...। वास्तव में आज के युग में गृहस्थ इसलिए सुखी नहीं हो पाता है क्योंकि उसकी नींव ही ठीक प्रकार से नहीं रखी जाती है। गृहस्थ में उसे ही जाने का अधिकारी माना जाता था जो गुरुकुल में आचार्य के चरणों में बैठ कर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हो जाता था। उपाध्यायों के सान्निध्य में वह शारीरिक रूप से तो स्वस्थ बनता ही था मगर उसके साथ - साथ उसे मानसिकता सबलता भी प्राप्त होती थी। ऐसा स्वयं परिपक्व व्यक्ति ही सुखद और सुन्दर गृहस्थ का निर्माण करने में सफल हो पाता है.... आगे वह गृहस्थी कामना करता है कि इस प्रकार गुणों से सुसज्जित वह मेरी सन्तान अपने सुन्दर गृहस्थ का निर्माण तो करे ही मगर साथ ही जिस ज्ञान-विज्ञान से उसने अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बनाया है उस (हव्यम् वहतु) ग्रहण करने योग्य विज्ञान को औरों तक ले जाने वाला भी हो। जब हमारे समाज में विधिवत् संस्कारों का पालन किया जाता तो ये बातें स्वतः ही लोगों के व्यवहारिक जीवन में हुआ करती थी। जब विद्यार्थी आचार्यकुल से विदाई लेने लगता था तथा उस दिन उसका समावर्तन संस्कार होता था तो आचार्य उसे बहुत ही सुन्दर उपदेश देते हुए कहते थे कि सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्... हे मेरे शिष्य तुम यहां से सांसारिक जीवन में जा रहे हो मगर तुम जीवन में सदा सत्य ही बोलना, सदा धर्म का ही आचरण करना, स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करना और उस किए हुए स्वाध्याय का आगे प्रवचन करने में अर्थात् आगे फैलाने में भी कभी प्रमाद नहीं करना.... और भी आगे बहुत सुन्दर एवं सार्थक उपदेश दिया जाता था। मगर यहां विशेषतः जो सदगृहस्थ की कामना है कि मेरी सन्तान सीखे हुए ज्ञान-विज्ञान को आगे ले जाने वाली हो.... ऐसी प्रेरणा व शिक्षा आचार्य द्वारा दी ही जाती थी।

- तहसील, सुन्दर नगर,
जिला मण्डी, हि.म.

महर्षि दयानन्द वचनामृत

-आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

विश्व के इतिहास में धर्म, राजनीति और समाज सेवा इन तीनों क्षेत्र में अपनी भूमिका निर्वाह करने वाले दुर्लभ महापुरुषों की श्रेणी में महर्षि दयानन्द अग्रगण्य हैं। जिन्होंने वेदोक्त धर्म की सच्ची व निभ्रान्त व्याख्या की। अनेक सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया। साथ ही स्वदेशी राज की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए स्वतंत्रता का शंखनाद करके विश्व का महान उपकार किया।

विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, आदित्य ब्रह्मचारी, महान योगी, सन्तहृदय दया, करुणा, परोपकार, सरलता, सहिष्णुता के धनी महर्षि दयानन्द महाराज के अनमोल वचनों को पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं -

1. जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान होता है।

2. जब तक इस होम का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

3. जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।

4. जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तब तक राष्ट्र बढ़ता रहता है। जब दुराचारी हो जाते हैं, तब राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

5. जिससे दुःख सागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग यमादि योगभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं, उन्हीं को तीर्थ समझता हूँ, इतर जलस्थलादि को नहीं।

6. 'मुक्ति के साधन' ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान ब्रह्मचर्य से विद्याप्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।

7. परमात्मा की इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता।

8. कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

9. परोपकार और परहित

करते समय अपना मान अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।

10. जो मनुष्य जगत का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।

11. जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ में भी ब्रह्मचारी के सदृश है।

12. सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

13. जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश पर हानि मात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

14. वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक, अर्थात्, एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ी भाग्यवान! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं।

15. जो कोई सभा में अन्याय होते हुए देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरुद्ध बोले, वह महापापी होता है।

16. एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।

17. जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वह प्रशंसनीय है।

18. मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुःख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा (यदि) निर्बल हो तो उससे भी डरता रहे।

19. मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता है।

20. मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिये है, न कि वाद विवाद विरोध करने

कराने के लिए।

दो रास्ते

- आचार्य प्रद्युम्न जी महाराज

दो पक्ष हैं - एक ओर है संसार, भोग, वैषयिक सुख, प्रकृति, अल्पता, असत्य, मिथ्यात्व, क्षणिक सुख तथा दूसरी ओर है सत्य, योग, भगवान्, आध्यात्मिक जीवन, ईश्वर, अमृत, अभयपद, मुक्ति या भूमा। जब यह कहा जाता है कि मुझे असत्य से सत्य को, मृत्यु से जीवन को, अन्धकार से प्रकाश को, दुरितों से भद्र को, कुपथ से सुपथ को, कुटिलता से सरलता को, पितृयाण से देवयान को, प्रेय से श्रेय को, अभ्युदय से निःश्रेयस को बन्धन से मुक्ति को, अज्ञान से ज्ञान को, क्षणिक सुख से शाश्वत आनन्द को, भोग से योग को, पृथिवी से द्युलोक को या अल्प से भूमा को प्राप्त करा दो, तो इस प्रार्थना के पीछे एक तथ्य छिपा हुआ है कि दो रास्ते हैं - उनमें से एक पर मैं चलना चाहता हूँ। व्यक्ति या तो इस रास्ते से चल सकता है या उस रास्ते से। तृतीय मार्ग नाम की कोई चीज नहीं है।

खिलाड़ी जब खेल खेलते हैं तो वहाँ भी दो ही पक्ष होते हैं। यद्यपि वहाँ निर्णायक या दर्शक तीसरे कहे जा सकते हैं पर वे तो खेल से बाहर हैं। खेल में जो सम्मिलित हैं वे तो दो ही हो सकते हैं। योद्धा जो युद्ध कर रहे हैं वहाँ भी दो ही पक्ष होते हैं, तीसरा नहीं। अब हमारे ऊपर है कि हम राम के सैनिक बनना चाहते हैं या रावण के, दुर्योधन की ओर से लड़ना चाहते हैं या युधिष्ठिर की ओर से। यदि हम कभी राम के सैनिक बनकर रहना चाहें और कभी रावण के, तो दोनों ही हमें अस्वीकार कर देंगे। हाँ! एक बात तो है- चुनाव में हमने गलती कर दी और बाद में समझ आया कि यह ठीक नहीं किया तो दूसरे पक्ष वाले के सामने आत्म-समर्पण कर दें कि यह मुझसे भूल हो गयी अब मैं आपके ही पक्ष में रहूँगा, पर यह नहीं हो सकता कि कभी इधर आ जाये कभी उधर चला जाये। पहले सूक्ष्मता से देख

लेना चाहिए और किसी एक को स्वीकार कर लेना चाहिए। चुनाव करने में भूल हो गयी हो तो उसे छोड़कर सदा-सदा के लिये दूसरे के पास चले जाना चाहिए।

कोई व्यक्ति इस प्रकार माया से जुड़कर भी बाद में मायापति के पास चला जाता है तो उसे फिर माया की तरफ एक क्षण के लिये भी नहीं देखना चाहिए। माया की तरफ मुड़कर न देखने का नाम ही 'वैराग्य' है तथा मायापति में ही अपने मन को लगाये रखने के लिये यत्न करते रहने का नाम 'अभ्यास' है। इन दोनों की समुदित साधना के फलस्वरूप ज्ञान की वह निर्मल स्थिति प्राप्त हो जाती है कि मन का पूर्ण रूपांतरण हो जाता है, उसे माया, संसार या विषयों से हटे रहने के लिये प्रयास नहीं करना पड़ता-सब कुछ सहज हो जाता है। इस सहज योग की प्राप्ति हेतु प्रथम विवेकवैराग्य, फिर समर्थगुरु का मार्गदर्शन एवं भागवत कृपा जरूरी है।

- धर्म क्या है? जैसे गुड़ का धर्म मिठास वैसे ही मनुष्य का धर्म 'मनुष्यता'।

- मनुष्यता क्या है? सतत ज्ञान-समाधान में जीना अर्थात् स्वाधीनता, स्वराज्य, हेतुरहित अनुराग, निष्कामसेवा, निर्भयता, विनय, ऊर्ध्वारोहण, अपने ही द्वारा अपना अतिक्रमण इत्यादि।

- इस समस्त नाम-रूप से परे होते हुए भी कण-कण में व्यापक एक निर्गुण तत्त्व है जो चिन्मय है, ज्ञानरूप है, आनन्दमय है, अनन्त है। मनुष्येतर समस्त सृष्टि में भी नित्यनियमों के रूप में वह कार्य कर रहा है किन्तु सृष्टि के वे घटक उसकी उपस्थिति का अनुभव नहीं कर पाते। केवल मनुष्य को ही यह सामर्थ्य उपलब्ध है कि उस निर्गुण तत्त्व की उपस्थिति का या उसके शुद्ध स्वरूप का अनुभव करके पूर्ण सत्य व पूर्ण सुख को पा सकता है। मनुष्य को भी उस तत्त्व का अनुभव एकाग्रता सापेक्ष होता है। मनुष्य अपनी पूर्ण नीरव अवस्था में ही मूर्तब्रह्मांड में अमूर्त ब्रह्म का अनुभव कर सकता है।

- पतंजलि योगपीठ हरिद्वार

पर्यावरण प्रदूषण (समस्या कारण और निवारण)

सम्पूर्ण मनुष्य जाति जिस खाद्य सामग्री का प्रयोग करती है उसका अधिकांश भाग अन्न, शाक, फल, फूल, वनस्पति, कन्द, मूल, औषधि आदि के रूप में होता है। ये सब खाद्य पदार्थ मिट्टी, पानी, हवा तथा सूर्य के प्रकाश से उत्पन्न होते हैं। शेष भाग पशु, पक्षी, मछली आदि-आदि के माध्यम से प्राप्त होता है, ये सभी अन्ततः वनस्पति आदि खाकर ही जीते हैं। आज धरती पानी, वायु आदि के प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्व से रहित अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।

विषय भोगों को अधिकाधिक मात्रा में भोगने की लालसा ही, आज के संसार में उत्पन्न हुये अनियंत्रित औद्योगिकीकरण के पीछे मुख्य कारण है। इसी के परिणाम स्वरूप आज सड़कों, नहरों, बांधों, रेलों, कारों, बसों, ट्रकों, संचार साधनों कलकारखानों, तकनीकी यंत्रों का जाल सा बिछ गया है। खाद्यान्नों, सब्जियों, फलों आदि का उत्पादन अधिकाधिक करने के लिये रासायनिक खादों तथा कीटनाशक औषधियों का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। इन सबके माध्यम से आज का अधिकांश जनसमुदाय भोग विलास की सामग्री में लिप्त होता चला जा रहा है।

भोग सामग्री बढ़ी, भोग बढ़ा, किन्तु इन कल-कारखानों, वाहनों तथा रासायनिक खादों आदि से उत्पन्न होने वाली महाविनाशकारी गैसों, धुँएँ और बीमारियों ने आज तबाही मचा दी है। अनियंत्रित औद्योगिकीकरण के परिणाम स्वरूप पृथ्वी पर प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर उत्पन्न हो गया। इस राक्षस के चुंगल में हवा, पानी, मिट्टी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश सभी कुछ आ चुका है। विश्व के सभी बुद्धिजीवियों, विशेष कर वैज्ञानिकों को इस विषय पर संशय हो गया है कि ऐसी पृथ्वी पर मनुष्य नामक प्राणी भविष्य में जीवित भी रह पायेगा या नहीं। अग्रिहोत्र यूनिवर्सिटी अमेरिका द्वारा प्रकाशित (Wholistic Healing) पुस्तक में तो स्पष्ट कह दिया गया है कि



“प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के खिलाफ सामूहिक तौर पर यदि कोई उपाय न किया गया तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पायेगा।”

नदी नहरें, तालाब, झीलें, कुएँ जो सिंचाई के महत्वपूर्ण साधन हैं, क्लोराइट्स, पेसिअसाईड्स व अन्य अनेक प्रकार के जहरीले रसायनों से भयंकर प्रदूषित हो गये हैं। परिणाम स्वरूप इनका पानी उत्तम फसल उत्पन्न करने में असमर्थ हैं। प्रदूषण के कारण ही प्रकृति का वर्षा चक्र (मानसून) अनिश्चित व असंतुलित हो गया है। साथ ही कहीं-कहीं पर तो वर्षा का पानी इतना अम्लयुक्त होता है कि अच्छी फसलें भी नष्ट हो जाती हैं।

जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदी, नालों, तालाबों, खेतों में फेंकी जाने वाली गंदगी या कूड़े कचरे के कारण पौधों की कार्बनडाईआक्साइड को ग्रहण करने तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन को छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द होती जा रही है। वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियंत्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षों बाद ऐसी स्थिति बन जायेगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राण वायु का थैला बांधकर रखना होगा जिससे कि शुद्ध वायु ले सकें। जैसे आज अशुद्ध पानी और वायु के कारण खनिज जल की शीशियों तथा नाक को ढकने के लिये कपड़े की पट्टी का प्रचलन हो गया है।

फलों, शाकों, सब्जियों में जहर, खाद्यान्नों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए खेतों में रासायनिक खादों का अंधाधुंध प्रयोग

—आचार्य ज्ञानेश्वराय

किया जा रहा है। परिणाम स्वरूप कृषि योग्य उपजाऊ भूमि की उर्वरा तथा जलधारण करने की शक्ति क्षमता एवं चिकनाई समाप्त होती जा रही है तथा खाद्यान्न के उत्पादन में जो उत्कृष्टता थी वह भी नष्ट हो गई। इन्सटीट्यूट ऑफ साइन्स (बायो कैमिस्ट्री विभाग) के मुम्बई स्थित वैज्ञानिकों ने पिछले वर्षों में स्थानीय फलों व सब्जियों की जांच की तो पाया कि इन सब्जियों व फलों में कीटनाशक जहरीली

दवाओं के अंश अधिक मात्रा में विद्यमान है जो विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निश्चित की गयी है।

वैज्ञानिकों के अनुसार—जो वस्तु मनुष्य को स्वस्थ, बलवान, स्फूर्तिमान रखती है उस वस्तु का नाम ओक्सीजन या प्राण है।

इस प्राण-वायु आक्सीजन में आप धूल, सीसा, पारा व अन्य अनेक जहरीली गैसें मिल गयी हैं। तो सब हमारे फेफड़ों के माध्यम से रक्त में मिल जाते हैं पुनः सारे शरीर में फैल कर विभिन्न रोगों को उत्पन्न करते हैं।

काम की बातें

— भूखा पेट, खाली जेब और झूठा प्रेम, इंसान को जीवन में बहुत कुछ सिखा जाता है।

— प्रतिभा का विकास शांत पर्यावरण में होता है और चरित्र का विकास मानव जीवन का तेज प्रवाह में।

— सकारात्मक व्यक्ति सदा दूसरों में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

— सपने वो सच नहीं होते जो सोते वक्त देखे जाते हैं। सपने वो सच होते हैं जिनके लिए आप सोना छोड़ देते हैं।

— संभव की सीमा जानने का केवल एक ही ढंग है, असंभव से भी आगे निकल जाओ।

— सफलता तुम्हारा परिचय विश्व से करवाती है और असफलता तुम्हें विश्व का परिचय करवाती है।

— कठिन समय में समझदार व्यक्ति रास्ता ढूँढता है और कायर बहाना।

— दो चीजें देखने में छोटी नजर आती हैं। एक दूर से और एक गुरूर से।

— गलत फहमी का एक पल इतना विषैला होता है। जो प्यार भरे सौ लम्हों को एक क्षण में भुला देता है।

— जीवन में एक बार जो निर्णय कर लिया तो फिर पीछे मुड़कर मत देखो, क्योंकि पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते।

— आप जो आज अपना मूल्य आंकते हैं, कल की सफलता उसी का साकर रूप है।

—संग्रह मनीषा सैनी, जींद

देराभक्ति की ज्योति जलाने वाले

ऋषि दयानन्द ने भारतवर्ष के वृक्ष का जल सिंचन किया था। उनके शुभ प्रयास से विविध प्रकार के स्वादिष्ट फल मिले और मिलेंगे। स्वामी जी ने युवकों के हृदय में त्याग, परोपकार और देश भक्ति की ज्योति जगाई थी। हिन्दू जाति की जो उन्नति दिखाई दे रही है उसका श्रेय स्वामी जी को ही प्राप्त है। भारतवर्ष के इतिहास में स्वामी जी का नाम महान् सुधारकों की पवित्र श्रेणी में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

—क्रान्तिकारी ला. हरदयाल

बसन्त ऋतु में आयुर्वेद की उपादेयता

(मार्च-अप्रैल) समय बसन्त ऋतु का है। इस ऋतु में दिशाएं निर्मल प्रकृति वन उपवन से शोभायमान एवं कोकिल के मधुर स्वरों से गुंजायमान हैं। कालः संङ्कलयति कालयति वा भूतानीति कालः। (सुश्रुत)

वस्तुओंका जो निर्माण और विनाश करे वह काल है। यह काल मानव को दो रूप नित्यग (ऋतु) एवं आवस्थिक (वय) से प्रभावित करता है।

आयुर्वेद सम्मत बसन्त ऋतु का वैज्ञानिक वर्णन -

आयुर्वेद समग्र सृष्टि का चिन्तन करता है। मानव इस ब्रह्माण्ड का छोटा अंश है। ब्रह्माण्ड में जो भी घटनाएं घटती हैं उससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव शरीर प्रभावित होता है। क्योंकि संसार की सभी वस्तुएं पञ्चमहाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) से निर्मित हैं। सर्वद्रव्याणि पञ्चभूतानि अर्थात् यह संसार, शरीर आहार अन्य सभी वस्तुएं इन्हीं पञ्चमहाभूतों द्वारा निर्मित हैं।

‘आकाश एवं वायु’ महाभूत से आयुर्वेदिक वात महादोष, अग्नि से पित्त महादोष, जल एवं पृथ्वी से कफ महादोष का विनिर्माण होता है। शरीर का वात महादोष वायु द्वारा, पित्त महादोष सूर्य द्वारा एवं कफ महादोष चन्द्रमा द्वारा प्रभावित होता है।

वात, पित्त कफ दोष जहाँ शरीर का निर्माण एवं संचालन करते हैं वहीं वायु, सूर्य एवं चन्द्रमा संसार का। कहा भी गया है “यावन्ते लोकाः तावन्ते पुरुषाः। जैसे यह संसार है वैसे ही यह पुरुष। तात्पर्य यह है कि हमारा शरीर इस प्रकृति का एक अंश है जो इसके परिवर्तन के साथ ही शरीर में परिवर्तन होने लगते हैं। परिवर्तन शरीर को हानि-लाभ पहुँचाते हैं आयुर्वेद इन्हीं परिवर्तनों का सम्यक ज्ञान कराता है एवं हानिकारक परिवर्तन से सुरक्षा को पहले से ही तैयार कराता है। वातावरणीय-सांसारिक परिवर्तन (Environmental Changes) का मानव शरीर पर प्रमुख रूप से उसके आहार विहार (Diet & Life Style) से पड़ता है। बसन्त ऋतु में कफ दोष शरीर में प्रकुपित रहता है। शरीर में कफ दोष का स्थान उरः (वक्ष =Chest) एवं शिर (Head) है। यही कारण है इस ऋतु में श्वास (Bronchial Asthma)

कास (Cough) प्रतिश्याय (Rhinitis) हृद्दरोग, शिरः शूलः Headache) प्रमुखता से होती है। यदि बसन्त ऋतु के अनुसार सम्यक आहार विहार न किया जाये तो सर्वशरीरगत व्याधियां जन्म ले लेती हैं।

बसन्त ऋतु में रोगोत्पत्ति कारण -

बसन्त ऋतु में शरीर में शिशिर ऋतु में संचित कफ दोष सूर्य की उष्णता पाकर पिघलने लगता है जिससे कफ दोष प्रकुपित होकर प्राणवह स्रोत अवरोध एवं मन्दाग्नि उत्पन्न कर नानात्मज व्याधियां उत्पन्न करता है।

बसन्त ऋतु में आहार : आहार संभवं वस्तुः च आहार संभवं रोग। अर्थात् आहार से ही शरीर एवं रोग विनिर्माण।

पथ्य : 1. कटु तिक्त एवं कषाय प्रधान स्वाद वाले आहार प्रयोग करें। 2. छाछ (मट्ठा) या Toned Milk या दूध में हल्दी मिलाकर प्रयोग करें। 3. प्रातः हल्का, सुपाच्य एवं समय-मात्रा से आहार लें। 4. गेहूँ, पुराना चावल, यव, मक्का मूँग, मसूर, अरहर का सेवन करें। 5. पानी उबालकर हल्का गुनगुना रहे तभी पान करें। 6. आद्रक स्वरस या आद्रक युक्त green tea बिना दूध के पियें। 7. फलों में अनार, Apple, Apricots, Pears, Dried fruit 8. प्रत्येक दिन आद्रक एवं हल्दी का नियमित सेवन करें। आद्रक एवं हल्दी बसन्त ऋतु से होने वाली मन्दाग्नि एवं स्रोतावरोध को कम कर व्याधि से रक्षा करती है।

अपथ्य : 1. मीठे, खट्टे एवं नमकीन स्वाद वाले आहार का प्रयोग न करें। 2. ठण्डी, गरिष्ठ, तरलीय, भुनी मक्खन घी इत्यादि। 3. दही, भैंस का दूध, गाढ़ा दूध, ठण्डा दूध, प्रातः दूध सेवन न करें। 4. विना भूख के, भूख से ज्यादा, अनियमित रूप से कोई भी भोज्य पदार्थ ग्रहण न करें। 5. फ्रुट जूस का सेवन भी न करें। 6. केला, चीकू, मीठे फल व अंगूर आम इत्यादि का सेवन न करें। 7. छोले, राजमा, सेम गरिष्ठ भोज्य पदार्थ वर्ज्य है। 8. मांसाहार का सेवन न करें। 9. फ्रिज का रखा वासी खाना भी न खायें।

बसन्त ऋतु में विहार (Life style)

पथ्य :- 1. बसन्त ऋतु में हल्का व्यायाम, अपने बल के आधी सामर्थ्य के अनुसार व्यायाम करें। 2. कुञ्जल कर्म (योग विशेषज्ञ/ चिकित्सक) के देखरेख में करें। 3. शरीर पर उशीर का लेप करें।

-डॉ. दीपक तीवारी

4. शरीर पर सुखोप तैल अभ्य करें।
5. स्वचरित्र उच्चकोटि का बनायें रखें।

अपथ्य :-

1. दिवाशयन (Daysleep) बिल्कुल न करें। (strictly prohibited)
2. सूर्य की सीधी रोशनी से बचें।

आयुर्वेद ही आहार का शरीर से एवं शरीर का ब्रह्माण्ड (ie Universe) से सम्बन्धों का स्पष्ट वैज्ञानिक वर्णन बताता है, जिसके आधार पर ही स्वास्थ्य रक्षा कर स्वस्थ भारत का निर्माण किया जा सकता है न केवल नित्य नये दिन व्याधि एवं पुनः व्याधि से व्याधि उपद्रवों पर शोध कर।

नोटः यह आहार सामान्य स्वस्थ व्यक्ति के लिए है किसी व्याधि विशेष होने पर व्याधि सम्मत आहार में परिवर्तन आवश्यक है।

मो. 9953024116

सद् व्यवहार विन्दु

1. व्यवहार एक ऐसा आभूषण है जो ज्ञान को सुशोभित करता है, संसार में स्वयं के मार्ग को सरल बनाता है।
2. जैसे बुरे व्यवहार का बुरा प्रभाव पड़ता है, वैसे ही अच्छे व्यवहार का अच्छा प्रभाव पड़ता है।
3. जो व्यवहार अपने लिये ठीक न लगे, उसे दूसरों के लिये भी नहीं करना चाहिए।
4. दुनिया में तमाम अच्छे व्यवहार, अच्छे लोगों के छोटे-छोटे त्यागों से बनते हैं।
5. शिष्टता का प्रभाव दूर-दूर तक जाता है, सब से अच्छी बात यह है कि, इस में कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता है।
6. हमारा व्यवहार ही है, जो हमारी छवि, दूसरों के मन में बसाता है। इस के द्वारा हम शत्रुओं को भी मित्र और मित्रों को भी शत्रु बना लेते हैं।
7. मनुष्य और पशु में केवल व्यवहार का ही अन्तर है। अन्यथा शेष बातें प्राकृतिक कर्म समान हैं। खाना पीना, सोना जागना, वंश वृद्धि कर्म समान हैं।
8. व्यवहार कुशलता मानव का सर्व श्रेष्ठ गुण है। जीवन की सफलता का उत्कृष्ट साधन भी है।

-सावित्री शर्मा प्रधाना

आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर

क्रान्तिवादी महापुरुष

स्वामी दयानन्द महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरुष तो थे ही, साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हम सबके लिए भारी महत्त्व है, क्योंकि आज भी हमारे समाज में बहुत-सी विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। उनका सामना महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलकर ही किया जा सकता है।

आध्यात्मिक व्यवस्था, कुरीतियां तथा राजनीतिक दासता देश को जकड़े हुए थी, तब महर्षि दयानन्द ने राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। सत्य, सामाजिक एकता और एक ईश्वर की आराधना का सन्देश उन्होंने दिया। उन्होंने शिक्षा एवं ईश्वर पूजा की स्वतन्त्रता सभी के लिए उपलब्ध करने पर बल दिया। भारत के संविधान में सामाजिक क्षेत्र के लिए अनेक व्यवस्थाएं महर्षि दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा लेकर ही की गई हैं।

-डॉ. एस. राधाकृष्णन्
भूतपूर्व राष्ट्रपति

याददाश्त बढ़ाने के कारगर 10 नुस्खे

लापरवाही न करें -

(जब इंसान को उसके मौलिक मानवीय गुणों और व्यवहार के आधार पर ही आँका जाता है। इस कसौटी पर खरा उतरने के लिए भी जरूरी है कि हम खुद को शारीरिक और मानसिक तौर पर बिल्कुल फिट रखें। खासकर एकाग्रता और स्मरणशक्ति जैसे मामलों में तो थोड़ी भी लापरवाही महंगी पड़ सकती है।)

आधुनिक जीवन की आपाधापी ने इंसान के लिए ऐसी विचित्र भूलभुलैया रच दी है कि उसका 'मैकेनाइज्ड' दिमाग याद रखने की कुदरती क्षमता दिनोंदिन खोती जा रही है। जब फुरसत के लमहों में उसे अनायास 'कुछ छूट रहा है' का अहसास होता है तो वह कई बार अधूरेपन की ग्रंथि का शिकार होता है। ऐसे में जरूरी है एकाग्रता का साथ।

संचार क्रान्ति और सूचना तकनीक के क्षेत्र में बेहद तेजी से हो रहे विकास और तूफानी परिवर्तन ने आज पूरी दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की ऐसी हुकुमत कायम कर दी है कि अब इंसान को कुछ भी याद रखने की जरूरत महसूस नहीं होती है। टैक्नोलॉजी के सहारे सब कुछ करने और पा लेने की अंधी दौड़ अब हमारी जीवन शैली का हिस्सा बन चुकी है। खतरा ये है कि इससे हमारी याददाश्त कमजोर होते-होते, एक दिन जवाब देने के कगार पर भी पहुँच सकती है। इसके अलावा, कभी-कभी पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन में ऐसे भी पल आते हैं तो पेश है, याददाश्त बढ़ाने और बनाए रखने के आसान तरीके -

१ - एक बार कई काम हाथ में लेने यानी मल्टी-टाकिंग से बचें। इससे एकाग्रता भंग होगी और कुछ न कुछ भूल जाएंगे। कुछ दिनों में भूलने की ये आदत आपको याददाश्त पर ही हमला कर देगी। छोटी-मोटी फालतू बातों को दिमाग में स्टोर करके अपना फोकस खराब न करें।

२ - नींद के साथ समझौता न करें। डाक्टर अक्सर नींद पूरी न होने को स्मरण शक्ति का लोप होने की अहम वजह बताते हैं। किशोर उम्र

वालों के लिए नौ घंटे और वयस्कों के लिए सात से आठ घंटे सोना जरूरी है।

३ - हर काम को संगठित और अनुशासित ढंग से करने की आदत डाल लें। टु-डू लिस्ट और नोट्स बनाएं, प्लानर का इस्तेमाल करें, हर चीज को रखने का स्थान निर्धारित करें, और टाइम टेबल बनाकर काम को आगे बढ़ाएं।

४ - तनाव से तौबा करें, क्योंकि ये ही याददाश्त का दुश्मन नम्बर एक है। हर काम में दूसरों का सहयोग लेने में न हिचकें। सुबह की सैर, दैनिक प्राणायाम, ध्यान और गहरी साँस किसी भी हालत में तनाव को पास नहीं फटकने देते। लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों से चढ़ें, पुल में जाकर स्विमिंग करें, साइकिल चलाएं, ऐरोबिक्स करें, सुपर ब्रेन योगा को आजमाएं। इनसे दिमाग को आक्सीजन मिलेगी, और उसमें नई स्फूर्ति आएगी।

५ - सूचना-विस्फोट के शिकार और गैजेट्स के गुलाम हरगिज न बनें। इन्हें अपने काम का साधन बनाएं, साध्य नहीं। इनके प्रति दीवानगी और अंधनिर्भरता से आपका दिमाग समय-समय पर 'हेंग' भी हो सकता है, जिसका स्मरणशक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

६ - अगर भुलकड़ स्वभाव ज्यादा ही मुसीबत बन रहा है, तो अपना थायरायड टेस्ट कराएं। डाक्टर की राय से ये भी चेक कर लें कि अल्जाइमर, सिफलिस या एड्स के लक्षण तो नहीं पनप रहे हैं। विटामिन बी-१ और बी-१२ की कमी हो, तो उसे पूरा करें। या फिर याददाश्त बढ़ाने वाले लैब का रुख करें। वहाँ एक्सपर्ट्स आपको भावनाओं पर काबू रखना और व्यर्थ की स्मृतियों से छुट्टी पाना सिखा देंगे। इससे दिमाग पर दबाव घटेगा, और याद रखने की ताकत में इजाफा होगा।

७ - दिमागी कसरत खूब करें। सोचो, सवाल करें, पढ़ें, लिखें, पहेली बूझें, शतरंज खेलें, नई हॉबी पाल लें, अतीत की यादें ताजा करें। इनसे दिमाग के तन्तु ताकतवर होंगे। दिमाग को सुकून देने के लिए गाएँ, गुनगुनाएं, पेंट करें, संगीत सुनें, प्राकृतिक स्मरणीय

स्थल पर घूमने जाएं। ये सब भी तेज रफ्तार दिमाग के टॉनिक हैं।

८ - याद रखिये, दिमाग का ८५ प्रतिशत हिस्सा तरल होता है, जिसके सूखने से याददाश्त भी प्रभावित होती है। इसलिए अपनी टेबल पर हमेशा पानी की बोतल रखें और समय-समय पर उसे गटकते रहें। पानी पीना शारीरिक और मानसिक सेहत, दोनों के लिए अच्छा है।

९ - थोड़े-थोड़े फासले पर कुछ न कुछ जरूर खाएं। कम खाएं। मगर वो पोष्टिक और प्राकृतिक हो, तला-भुना और फास्ट फूड नहीं। फल, दही, अंकुरित चना, बादाम, अखरोट, मूँगफली, जैसे आइटम दिमागी चुस्ती के लिए मुफीद रहते हैं।

१० - बुरा न सोचें। अपनी सोच सीधी रखें, निगेटिव नहीं। सकारात्मक सोच से दिमाग हरदम तरो-ताजा और चालू हालत में रहता है, उसे भूलने की बीमारी नहीं होती। सुन्दर दृश्य निहारने और खुशामिजाज रहने से भी सोच पॉजिटिव बनती है।

दिव्य जागरण

एक शब्द जीवन में क्रान्ति के लिए पर्याप्त है और वह है जागरण। अपनी बेहोशी को खत्म करो और अपने विवेक को जागृत करो। बंधी बंधाई धारणाओं के प्रति अपने आपको समर्पित मत करो, खुले आकाश में अपने चिन्तन को स्वतन्त्र छोड़ो, एक निर्मल भाव के, बिना किसी पूर्वाग्रह के, अनेको स्वर लहरियों की गूँज आपको सुनाई देगी।

मनुष्य जो भी करता है वह किसी न किसी के प्रेरणा के वशीभूत होकर करता है। कृत्य का परिणाम उसका बाहरी रूप है लेकिन कृत्य का भीतरी रूप उसके पीछे छिपी हुई प्रेरणा है। प्रेरणा की प्रकृति ही कार्य की प्रकृति को निर्धारित करती है। मधु इसलिये गुणवान है क्योंकि जहाँ से वह संचित की जा रही है वह गुणवान है।

कोई भी दो कार्य बाहर से एक जैसे दिखाई दे सकते हैं लेकिन यदि उनके पीछे की प्रेरणा का मूल अलग-अलग है तो उनके परिणाम बिल्कुल अलग-अलग आयेंगे। आर.सी.एम. बिजनस रूपी बहुउद्देशीय अभियान जो सामाजिक पारिवारिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत सभी परिपेक्ष्य में फलदायक है, जो सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण कर सकता है, जो मात्र एक बिजनस न होकर एक बहुआयामी अनुष्ठान है। इसके पीछे कौन सी प्रेरणाएं हैं, इसके मूल में क्या छिपा है, वह कौन सी शक्ति है जो हर कदम पर हौसला देती है, वे कौन से निर्देश हैं जो इस अभियान को संचालित करने में सहयोग प्रदान करते हैं, वे कौन से पुष्प हैं जिनका रस इस आर.सी.एम. बिजनस रूपी मधु में संचित किया गया है। इन्हीं को उद्घाटित करने का भाव मन में उपजा है।

-इति

श्री सुरेश चुघ (शिक्षाविद)

ईश्वर बैठा है, तू हिसाब ना कर

लोग कहते हैं हम मुस्कुराते बहुत हैं,
और हम थक गए दर्द छुपाते छुपाते...
खुश हूँ और सबको खुश रखता हूँ,

लापरवाह हूँ फिर भी सबकी परवाह करता हूँ —

चाहता तो हूँ की ये दुनियाबदल दू...

पर दो वक्त की रोटी के जुगाड़ में फुर्सत नहीं मिलती दोस्तों

महँगी से महँगी घड़ी पहन कर देख ली, वक्त फिर भी मेरे हिसाब से कभी ना चला...।

यूँ ही हम दिल को साफ़ रखा करते थे... पता नहीं था की, कीमत चेहरों की होती है!!

अगर खुदा नहीं है तो उसका ज़िक्र क्यों? ? और अगर खुदा है तो फिर फिर क्यों? ? ?

दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं, एक उसका अहम और दूसरा उसका वहम....

पैसे से सुख कभी खरीदा नहीं जाता और दुःख का कोई खरीदार नहीं होता।

मुझे जिंदगी का इतना तजुर्बा तो नहीं पर सुना है सादगी में लोग जीने नहीं देते।

सभी लोग गौर फरमाइये.... दो लाईन कहना चाहती हूँ...

किसी की गलतियों को बेनकाब ना कर

ईश्वर बैठा है तू हिसाब ना कर... -हरिवंशराय बच्चन

-संग्रहकर्ता, नारायणी मलिक-8527003303

पतंजलि महिला समिति, दिल्ली

वीर हकीकत राय

आज से कोई 300 वर्ष पहले वीर हकीकत राय को ईश निन्दा के झूठे आरोप के कारण कट्टरपंथी मुल्लाओं द्वारा मृत्यु की सजा दी गई। वीर हकीकत राय का जन्म सियालकोट के साथ लगते एक छोटे गांव में हुआ था। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। पांचवी कक्षा में वह लाहौर में पढ़ते थे। एक बार वह अपनी पुस्तक में रखी दुर्गा महामाई की स्तुति कर रहा था कि उसके एक सहपाठी ने दुर्गा महामाई के विरुद्ध अपशब्द का प्रयोग किया। ज्योंही सहपाठी ने दुर्गा महामाई के विरुद्ध अपशब्द कहे वीर हकीकत ने धमकी दी यदि वह दुर्गा माता को गाली देगा तो मैं भी आपकी फातिमा को गाली दूंगा (यद्यपि वीर हकीकत राय ने फातिमा के विरुद्ध अपशब्दों का प्रयोग नहीं किया था)

मुस्लिम बच्चे ने स्कूल में मौलवी के पास शिकायत दर्ज करवाई कि वीर हकीकत राय ने फातिमा के विरुद्ध अपशब्दों का प्रयोग किया है। स्कूल के मौलवी ने यह केस साथ लगती मस्जिद के मुल्ला के पास दर्ज करवाया। इस संबंध में तीन मौलवियों की कमेटी का गठन किया गया। मौलवियों ने स्कूल के बच्चों और मौलवी के बयान कलमबद्ध किये और वीर हकीकत राय को ईश निन्दा का दोषी करार देकर उसे मृत्यु दंड की सजा की सिफारिश की। मस्जिद के मौलवियों ने यह भी कहा कि यदि वीर हकीकत राय अपना धर्म परिवर्तन कर लें या किसी मुस्लिम स्त्री से शादी कर ले तो मृत्यु की सजा माफ की जा सकती है। वीर हकीकत राय के मां-बाप भी इकलौती संतान होने के कारण उसे धर्म परिवर्तन के लिए कहने लगे ताकि उनके बच्चे की जान बच सके। दूसरी तरफ वीर हकीकत राय ने धर्म परिवर्तन और मुस्लिम लड़की से शादी की दोनों ही शर्तें मानने से इन्कार कर दिया। हकीकत राय के अनुसार रब के घर में सभी एक है। हां जिस धर्म में मैंने जन्म लिया है मैं उसे कभी नहीं बदलूंगा। वीर हकीकत राय को बार-बार समझाने पर जब वह नहीं माने तो सूबेदार ने उसे मृत्युदंड दिया।

वीर हकीकत राय की मृत्यु के बाद कुछ समय पश्चात् महाराजा शाहजहां को एक सपना आया कि उसके राज में निर्दोष हिन्दू लड़के को कैसे मौत के घाट उतारा गया है। अगले दिन शाहजहां ने अपने गुप्तचरों द्वारा इस केस की जांच के आदेश दिए। गुप्तचर विभाग से रिपोर्ट प्राप्त होते ही उन्होंने लाहौर में घोषणा करवाई कि जिन लोगों ने हकीकत राय को ईश निन्दा के कारण मृत्युदंड दिया है उनको बड़े-बड़े इनाम दिए जायेंगे।

राजा से इनाम लेने के लालच में वीर हकीकत राय का सहपाठी, स्कूल का मौलवी और पड़ताल कमेटी के सदस्य इत्यादि परिवार सहित रावी नदी के किनारे एकत्रित हुए। शाहजहां के गुप्त आदेशानुसार सभी लोगों को एक बड़ी किशती में बैठाया गया। किसी को यह खबर नहीं थी कि किशती कहां जाएगी केवल किशती के मल्लाह को पता था कि क्या होने वाला है। किशती बीच मझाधार में आते ही किशती को डुबो दिया गया और सभी डूब कर मर गए।

निर्दोष वीर हकीकत राय की मृत्यु दंड के लिए सभी दोषियों को शाहजहां ने एक ऐतिहासिक सजा दी। लाहौर में वीर हकीकत राय की समाधि पर वसंत पंचमी के दिन एक बड़ा भारी दीवान सजाया जाता है।

—श्रीमती आदर्श सहगल
प्रधाना आर्य महिला आश्रम

वैदिक सूर्य

स्वामी दयानन्द एक ऐसे प्रकाश-स्तम्भ हैं, जिन्होंने असंख्य मनुष्यों को सत्य का मार्ग बतलाया है। उनके देश तथा देश की जनता पर किये गये उपकार सदैव अमर रहेंगे। महर्षि वर्तमान अन्धकार युग के लिए 'वैदिक सूर्य' थे। मैं अपने को उनका अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूँ। मैं उनके प्रशंसकों में हूँ।

—देवता स्वरूप भाई परमानन्द

मृत्यु भय

सभी प्राणियों (मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग) की दो मुख्य कामनायें होती हैं: मैं सदा जीवित रहूँ और सदा सुखी रहूँ। कोई भी काल का ग्रास नहीं बनना चाहता परन्तु ये दोनों बातें असम्भव हैं। जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है और हर प्राणी को अपने अपने कर्मों के अनुसार सुख और दुख भोगना पड़ता है शरीर के प्रति यह मोह अदभुत है। शरीरधारियों की मृत्यु तो परमावश्यक है।

मृत्यु निश्चित है परन्तु उसका समय अनिश्चित है। शरीर धारण करने के साथ ही इस शरीर के खोने का भय भी उत्पन्न हो जाता है। मृत्यु भय का कारण भौतिक शरीर से तादात्म्य और आसक्ति है। यह तादात्म्य अवचेतन मन में राग-द्वेष के क्रियाशील होने के कारण होता है। इस राग-द्वेष का कारण अहंकार है। अहंकार की उत्पत्ति अविद्या से होती है। इस लिये मृत्यु के भय से मुक्त होने के लिये अज्ञान और उसके प्रभावों को नष्ट करना होगा।

जो व्यक्ति मनादि में अहंता-ममता की भावनाओं का परित्याग करके एन्द्रिय जीवन से ऊपर उठ जाते हैं वे मृत्यु भय से मुक्त हो जाते हैं। सभी प्राणियों में मनुष्य ही भयमुक्त हो सकता है क्योंकि वह विवेक अर्जित कर सकता है। विवेक से अज्ञान दूर होता है।

अपनी अमरता में देह का मोह बाधक है। परम सुख का निरोधक मन का मोह है। देह के मरण को अपना मरण मानता है। जब व्यक्ति की श्रवण मनन और निदिध्यासन से यह निष्ठा परिपक्व हो जाती है कि वह स्थूल देह नहीं, वह सूक्ष्म शरीर नहीं, वह कारण शरीर नहीं, वह तो केवल शुद्ध चेतन आत्मा है तब उसकी मृत्यु नहीं होती। फिर मृत्यु भय का प्रश्न ही नहीं रहता।

महर्षि के चरणों में

नत मस्तक सब आर्यजन, करते तुम्हें प्रणाम
अजर-अमर है विश्व में, दयानन्द का नाम
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पाई
भूले-भटके जन-गन-मन को राह दिखाई
गोरे, भारत नहीं छोड़ते राजी-राजी
अगर न देते योग, देश के आर्यसमाजी

—काका हाथरसी

छूटे अधूरे काम

छूटे अधूरे काम तुम्हारे दयानन्द फिर आओ,
आधी खुली आंख भारत की पूरा इसे जगाओ।
दीन हीन परतन्त्र बने हम, मिलकर चलने की चाह न थी,
चतुर खिलाड़ी अंग्रेजों से मुक्ति की कोई राह न थी,
स्वतन्त्र तो अब हो ही गए, चलना मिल कर सिखा जाओ,
वेदों में वाणी ईश्वर की, दुनिया ने भी मान लिया,
नहीं मूर्ति पूजा इसमें क्यों भारत ने न जान लिया,
सच्ची भक्ति क्या होती है, फिर इनको आन समझाओ...
एक ईश्वर की सन्तानें हम, छुआछूत फिर होवे क्यों...?
छुआ छूत न होवे तो फिर, आरक्षण भी होवे क्यों?
छुआ छूत और आरक्षण के रोग से हमें बचाओ।
आधी नारी तो है शक्तिस्वरूपाएँ हम सबको यह समझाया,
भारत के लाखों लोगो ने, इसको सिर माथे से लगाया,
दुराचार करने वालो को, बल पूर्वक हड़काओ। आधी
गुरु धर्म क्या, शिष्य धर्म, क्या इन सबका था ज्ञान दिया,
गुरु विरजानन्द की कुटिया में, जा, एक नमूना दिखा दिया,
स्वतन्त्र भारत की शिक्षा नीति एक बार चला कर जाओ।
राजा पिता समान होता, सन्तान समान होती जनता,
कर आचरण इसी नीति पर राष्ट्र सुखी समृद्ध बनता,
भटक गए जो अपनी राह से सन्मार्ग उन्हें दिखलाओ,
आधी खुली आंख भारत की, पूरा उसे जगाओ।
छूटे अधूरे काम तुम्हारे दयानन्द फिर आओ...!

— वासन्ती चौधरी

सेवा में,

शुद्धि समाचार

फरवरी - 2017

स्वामी श्रद्धानन्द ने विश्व को मानवता का सन्देश दिया

महान देशभक्त व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द ने विश्व को मानवता का सन्देश दिया। जब समाज छुआछूत, जातिवाद से त्रस्त था, तब उन्होंने ऊंच-नीच का भेद मिटाया। ये सद्बिचार स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती ने रामलीला मैदान नई दिल्ली में आयोजित 90वें अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में कहे। रस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने अपने विचार रखे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में सार्वजनिक सभा का आयोजन दिल्ली के रामलीला मैदान में किया गया जिसमें सभा अध्यक्ष महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच. ग्रुप) मुख्य वक्ता डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य ने कहा कि 'स्वामी श्रद्धानन्द ने महिला सशक्तिकरण एवं हिन्दी रक्षा के लिए सर्वप्रथम आवाज उठाई। उस समय स्त्री जाति शिक्षा वंचित थी स्त्री और शूद्रों को हीनभावना से देखा जाता था।' श्री मनीष सिसोदिया, उपमुख्य मंत्री एवं शिक्षा मंत्री दिल्ली सरकार ने अपने उद्बोधन में सभा के सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि 'शिक्षा के क्षेत्र में मैं जो परिवर्तन करने की कोशिश कर रहा हूँ उसकी सोच स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों से ही प्राप्त करता हूँ। मेरा मानना है कि 12 साल की शिक्षा के बाद जो बच्चा स्कूल से निकले वह आधुनिक विज्ञान की सोच का हो।' मंच संचालन श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार रैली व सतीश चड्ढा ने किया।

सत्संग के अमृत-कण

1. मनुष्य राग, द्वेष, भय और मोह के वश में होकर पाप कर्म करता है।
2. दुर्गुण-दुराचारों से ही मनुष्य चौरासी लाख योनियों में जाता है और दुःख पाता है।
3. जीवन में स्वार्थ की अधिकता ही अशान्ति का कारण है।
4. स्वार्थ और अभिमान का त्याग करने से साधुता आती है।
5. धनवान बनने की अपेक्षा ज्ञानवान बनना अधिक श्रेष्ठ है।
6. मनुष्य को वस्तु नहीं बांधती उसकी इच्छा बांधती है।
7. क्रोध दो कारणों से होता है-कामना और अभिमान।
8. सन्तोष से काम, क्रोध और लोभ-तीनों नष्ट हो जाते हैं।
9. स्थूल शरीर में रोग स्थित है, सूक्ष्म शरीर में काम, क्रोध लोभ आदि स्थित हैं, और इन दोनों प्रकार के दुखों का बीड़ा शरीर में स्थित है।
10. दुराचार का त्याग और सदाचार का ग्रहण ही आत्मोद्धार है। -जे.आर कपूर

प्रवेश सूचना-सत्र 2017 -2018

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना पंजाब

छटी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपये) भरकर 31.3.2017 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

- कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 2 अप्रैल 2017 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी।

- सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-मंगल राम मेहरा (कुलपति)

फोन : 0161-2459563

आर्य समाज मदनगिर, नई दिल्ली के प्रधान श्री हरीचन्द आर्य जी के छोटे भाई श्री अर्जुन सिंह जी का हृदय आघात के कारण दिनांक 17.1.2017 को निधन हो गया। स्व. श्री अर्जुन सिंह जी एक कुशल अध्यापक व सामाजिक कार्यकर्ता थे। शुद्धि सभा की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि। -महामंत्री

जनवरी -2017 के आर्थिक सहयोगी

श्रीमती सावित्री जी नन्दा, साउथ सिटी-1, गुडगांव	वार्षिक सहायता	2500/-
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15 ऐ, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/-
आर्य समाज इन्द्रानगर, बगलौर	मासिक	750/-
कैप्टन प्रेम कुमार वलेचा जी, मयूर विहार फेज-1, दिल्ली		700/-
श्री चतर सिंह नागर जी महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, मंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्रीमती उमा बजाज जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	मासिक	500/-
श्री के.सी. गोयल जी, ए.सी.आर. एन्कलेव, दिल्ली		100/-
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/-
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा दिल्ली	मासिक	100/-
श्रीमती वेदवती आर्या स्नेही जी, पुराने दूरभाष के सामने नारायणा		100/-
श्री वसन्त कुमार पटनायक सिद्धपुर, उड़ीसा		100/-

आर्य समाज सफदर जंग एन्कलेव, नई दिल्ली

8000/-

शुद्धि समाचार फरवरी 2017 अंक की प्रकाशन का व्यय, श्री चतरसिंह नागर जी की प्रेरणा से प्राप्त राशि हम आर्य समाज प्रधान श्री रविदेव गुप्ता जी व मंत्री जी का धन्यवाद करते हैं।

श्रीमती आदर्श सहगल जी ने चार आजीवन सदस्य बनाये

श्रीमती कमला डाबर जी, आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	500/-
श्रीमती रेखा जी, एफ ब्लॉक, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती बीना बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती संतोष चावला जी, आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	500/-
आयुष्मती सौम्या आर्या सुपुत्री डॉ. देवेश प्रकाश आर्य मासिक दान	100/-

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती वरद कामिनी जी, मुम्बई	5001/-
श्रीमती संतोष चावला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, वार्षिक	1200/-
श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, द्विमासिक	1000/-
श्रीमती संतोष बहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,	100/-
श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती शोभा जी आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-

शोक समाचार

आर्य समाज कृष्णनगर के पूर्व संरक्षक श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया जी की आत्मा दिनांक 7 जनवरी 2017 को परमपिता परमात्मा की व्यवस्था से अपने शरीर का त्याग करके आगे कि यात्रा के लिए प्रस्थान कर चुकी है। यह सुनकर जो दुःख हुआ उस दुःख को व्यक्त करने के लिए हमारे पास वे शब्द नहीं हैं।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा में सभी ने प्रभु से प्रार्थना की कि यह दिवंगत आत्मा जहाँ कहीं, जिस भी स्थिति में भी हो उनको सद्गति प्रदान करें। शोकाकुल परिवार के उपर से जो पितृछाया का वरदहस्त उठ गया है उसकी पूर्ति हम नहीं कर सकते लेकिन सभी आर्य समाज परिवार शुद्धि सभा सदस्य सदैव आपके साथ हैं।

-चतर सिंह नागर (महामंत्री)

ऋषि बोधोत्सव का निमंत्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 23, 24, 25 फरवरी 2017 (गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पाठायण यज्ञ : दिनांक 18 फरवरी 2017 से 24 फरवरी 2017 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्रीमती अंजलि (करनाल), श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : डॉ. पूनम सूरी (प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

मुद्रक, व प्रकाशक - रामनाथ सहगल द्वारा गुरुमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादक : डॉ. देवेश प्रकाश आर्य